International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-02-2022, Accepted: 02-03-2022, Published: 17-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 26-28

प्रभा खेतान की माइल स्टोन रचनाः अन्या से अनन्या

भावना
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग), हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सोमेश्वर (अल्मोरा), उत्तराखंड, भारत

सारांश
अन्या से अनन्या कृति प्रभा खेतान की चर्चित कृतियों में से एक है। किताब में प्रभा खेतान ने स्त्री विमर्श के संदर्भ में स्त्रियों की वजूद को तलाशने का प्रयास किया है। जय आत्मकथा स्त्री–पुरुष संबंधों के बीच मौजूद असमानता को रेखांकित करती है। इस पुस्तक में यह असमानता स्त्री–पुरुष के लैंगिक असमानता के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक समानता को उजागर करती है। स्त्री के कार्यक्षेत्र में एक पुरुष का हस्तक्षेप तरह का होता है इस को दिखाने का प्रयास किया जाता है। एक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री के साथ पुरुष का व्यवहार किस हद तक दोयम दर्जे का होता है यह भी इस पुस्तक में दिखाया गया है। प्रभा खेतान ने इस आत्मकथा के माध्यम से स्त्रियों के संघर्ष गाथा को सबके सामने रखते हुए आने वाली तमाम बाधाओं से परिचित कराती हैं। साथ ही पितृसत्तात्मक सोच और समाज द्वारा पोषित ऐसी व्यवस्था के बारे में जागृत करती हैं। इस क्रम में प्रभा खेतान ने अपने जीवन के यथार्थ बोध से जो बिंब रखे हैं वह इतने ज्यादा वास्तविक हैं कि वह हमारे सम्मुख पितृसत्तात्मक समाज का काला चेहरा बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाती है। हम देखते हैं की पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री पुरुष के बीच आर्थिक विषमता की खाई है । इस खाई की तरफ अन्या से अनन्या पुस्तक में प्रभा खेतान ने लोगों का ध्यानाकर्षण करवाया है। व्यापार की दुनिया में आज भी स्त्रियों के श्रम का वह मूल्य नहीं है जो कि पुरुष का है । इन्हें तमाम बिंदुओं को लेकर लेखिका ने अपनी बात रखी है और उन बातों की पुष्टि के संदर्भ में जीवन के भोगे हुए यथार्थ को उदाहरण के रूप में रखा है। यह पुस्तक स्त्री विमर्श के लिए एक माइलस्टोन की तरह है जो एक मुकाम स्थापित करती है। लोगों के भीतर स्त्रियों के प्रति समानता की चेतना का प्रस्फुटन करती है।

मूल शब्दः स्त्री विमर्श, नारीवादी चिंतन, पितृसत्तात्मक समाज। विद्रूपता, संघर्ष, आर्थिक असमानता, आत्मनिर्भरता, विषमता आदि।

प्रस्तावना
"स्वीकारती हूँ आज अपने होने का सच, अंधेरे जगत में जैसी भी हूँ। धूप की चाह के साथ हूँ, निवारण है यह अस्तित्व मुखोटे के व्यामोह से मुक्त।"[1] अन्या से अनन्या प्रभा खेतान की माइलस्टोन रचना है। यह प्रभा खेतान की भोगी हुई जिंदगी की एक खुली किताब है, जिसमें उन्होंने अपने वजूद को तलाशती हुई एक स्त्री के संघर्ष की महागाथा को वर्णित किया है । अन्या से अनन्या आत्मकथा बोल्ड लेखन का एक अद्भुत महाख्यान है, जिसमें एक ओर स्त्री विमर्श के अनेक पक्षों को उद्घाटित किया गया है, वहीं दूसरी ओर इसमें लेखिका के अत्यंत गोपनीय व निजता से भरे हुए जीवन के नग्नयथार्थवादी धरातल को भी वाणी मिली है। किसी भी स्त्री के लिए अपने स्त्रियोजनित जैविक शक्तियों को समाज के सम्मुख उजागर करना एक साहसिक कदम के बजाय दुस्साहिक कदम है लेकिन इस साहसिक कदम को उठाने का एक सफल प्रयास प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथात्मक कृति अन्या से अनन्या में किया है। इस कृति में लेखिका ने अपने 'स्व' को तलाश करती एक स्त्री के निरंतर संघर्ष करने, आत्मनिर्भर बनने व व्यापार की दुनिया में प्रतिष्ठित होने तथा स्त्री–सशक्तिकरण की एक ऐसी महागाथा को प्रस्तुत किया है जो कि करोड़ों स्त्रियों में स्त्री विमर्श की चेतना के अलख को जगाती है। लेखिका कहती है कि – "यह समाज कई–कई मुकामों पर औरत को उसकी पंगुता महसूस करवाता है द्य औरतों के लिए सिर्फ प्यार काफी नहीं; व्यक्ति बनने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए, धन, मान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सभी कुछ। जीवन शुरू करने के लिए उसे भी पुरुष के बराबर जमीन चाहिए और इस जमीन को समाज से छीन कर लेना होगा। महज अनुनय–विनय से काम नहीं चलेगा। .....इस नई सृजित संसार में प्रगति का प्रशस्त मार्ग घर की देहरी से निकलकर पृथ्वी के अनंत छोर तक जाता है। स्त्री को यह समझना होगा।"[2] एक अन्य स्थान पर भी प्रभा खेतान अपने जीवन के संघर्ष की गाथा का वर्णन करते हुए लिखती हैं कि– "मैं कभी उन हजारों स्त्रियों की भांति हुआ करती थी, जो घर–गृहस्थी को ही अपना सर्वस्व मानती हैं। बाल–बच्चे जिनके लिए मथुरा और वृंदावन है लेकिन अब मैं किसी दूसरे व्यक्ति को अपना सर्वस्व मान ही नहीं पा रही थी। मैं स्वयं ही अपना सर्वस्व थी।"[3] प्रभा जी ने एक अनाथ एवं उपेक्षित बचपन जिया लेकिन इसके बावजूद भी उनकी अम्मा व गुरु डॉक्टर चटर्जी द्वारा दी गई नसीहतें उनके आंतरिक मन में गहरे स्तर तक घर कर गई। अम्मा व गुरुद्वारा दी गई इन्हीं नसीहतों का ही फल है कि प्रभाजी एक सशक्त व सबल महिला के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनाने में पूर्णता सफल हो पाई। प्रभा खेतान मानो पूरी दुनिया से चीख–चीख कर कहना चाहती थी कि वह भी कुछ है, उसकी भी अपनी एक हैसियत है जो कि डॉक्टर साहब से एकदम अलग है। प्रभा खेतान में कुछ कर गुजरने की चाहत थी। वह चांद को छूने की कल्पना करती थी। जिस सफलता का परचम उन्होंने लहराया वह वास्तव में प्रत्येक स्त्री विमर्शकारों के लिए व आम जन के लिए प्रेरणा स्रोत रहा।

अमेरिका जैसे देश में व्यापार की चुनौती भरी दुनिया से ताल–मेल बैठाना, भाषा व उच्चारण की समस्या से जूझना, एक–एक +1 कमाने के लिए रात–दिन एक करना तथा अनजान लोगों से संपर्क साधना यह कोई आसान काम नहीं था, लेकिन अपनी मेहनत व दूरदर्शी दृष्टि से प्रभा खेतान ने यह सब कर दिखाया। वापस भारत आकर लेखिका व्यापारिक दुनिया में जो अपनी पहचान का एक अलग इतिहास रचती हैं वह वास्तव में प्रशंसनीय है। उन्होंने व्यापार को एक साधना माना जैसे अन्य तरह की साधना या साहित्य साधना होती है। और उनका यह भी मानना था कि साधक केवल वही व्यक्ति बन सकता है जो कि अनुशासन में बंधे, श्रम करें व एकोन्मुखी अग्नि की तरह ही सिर्फ जलता ही रहे । लेखिका की इंडिया टुडे में एक सफल उद्यमी के रूप में फोटो प्रकाशित होना तथा कोलकाता चेंबर ऑफ कॉमर्स की पहली महिला अध्यक्ष बनना उनके सफल व्यापारिक जीवन का ही प्रमाण है। इस आत्मकथात्मक कृति में एक स्त्री के स्वावलंबन बनने व डॉ. सर्राफ द्वारा ईर्ष्या ग्रस्त होने की घटना के माध्यम से पुंशवादी समाज की मानसिकता एवं संकुचित सोच पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए स्त्री–विमर्श के एक ज्वलंत पक्ष को इस प्रकार प्रकार उजागर करते हुए लिखा है कि– "औरत के आर्थिक अवदान को नकारने की परंपरा रही है । पहले गृहस्थी में उसके श्रम को नकारा जाता था फिर मुख्यधारा में यदि उसे स्थान दिया जाता है, तो स्त्री को या तो अपवाद मान कर पुरुष वर्ग अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है या फिर उसे परे धकेल दिया जाता है । पर आने वाले वक्त में औरतों की सबसे बड़ी लड़ाई मुख्यधारा में बने रहने की होगी ।"[4] अन्या से अनन्या कालजई आत्मकथात्मक कृति में सिर्फ एक स्त्री के समाज एवं वैश्विक स्तर पर उसके वजूद की तलाश की दास्तां को वर्णित किया गया हो ऐसा कदापि नहीं है बल्कि इसमें व्यक्तिगत रूप से प्रेम के क्षेत्र में भी उसकी अस्मिता की तलाश की गाथा को वर्णित किया गया है । प्रभा खेतान डॉक्टर सर्राफ के व्यक्तिगत जीवन में स्थान पाने के साथ ही अपने वजूद को तलाशती हुई स्त्री विमर्श के अनेक पक्षों को भी अपनी आत्मकथा में वर्णित करती है । उनका कहना था कि पुरुष हमेशा से सिर्फ कमजोर स्त्री से ही प्रेम क्यों करता है ? वह सबल, सफल एवं स्वतंत्र सोच रखने वाली स्त्री से चिढ़ता क्यों है ? लेखिका जहां एक और अपने स्वावलंबी एवं स्वतंत्र सोच के कारण डॉ. सर्राफ जैसे पुरुषों के समक्ष एक चुनौती खड़ी करती हैं, वहीं दूसरी ओर उसे उस जैसे पुरुषों के क्रूरता पूर्ण व्यवहार का शिकार भी होना पड़ता है। डॉक्टर साहब का यह कहना कि तुम आगे बढ़ रही हो और मैं पिछड़ रहा हूं। मैंने तुम्हें पैसा कमाना सिखा कर बहुत बड़ी गलती की है, इस विषय में प्रभा खेतान लिखती हैं कि दृ" डॉक्टर साहब के व्यवहार की उग्रता, प्रतिहिंसा रह–रहकर उभर आती। वह मुझे नियंत्रित करने का नया नया तरीका सोचने लगते....। कुछ तो था डॉक्टर साहब के मन में जो इतने वर्षों से बूंद–बूंद इकट्ठा हो रहा था, जो इन दिनों बात–बेबात मुझ पर गरज–बरस कर ही शांत होता। मुझे कब कभी अपनी बेबसी और लाचारी पर गुस्सा आता तो कभी मैं पलट कर वार किए बिना नहीं मानती। मुझे अपने स्त्रीपन से चिढ़ हो रही थी, आखिर हम स्त्रियां अपने प्रिय पुरुष के अहम की संतुष्टि के लिए खुद का अवमूल्यन क्यों करती है ?"[5] इस प्रकार अपने उक्त कथन के माध्यम से भी लेखिका स्त्री विमर्श पर आधारित एक नया प्रश्न समाज के सम्मुख लाकर खड़ा कर देती है। प्रभा खेतान को अंदर ही अंदर जो घुटन घेरे हुए थी वह अंततः विस्फोट का रूप धारण करके डॉ. सर्राफ जैसे संकुचित मानसिकता वाले पुरुष से कह उठती है कि मुझे आपसे और आपकी गार्जियनशिप से मुक्ति चाहिए । लेखिका के मन में जहां एक तरफ स्वतंत्र होकर आकाश में नई–नई उड़ान भरने की चाहत थी वहीं दूसरी तरफ फिर से वापस लौटकर उसी पुराने दायरे में बंधने की व्यवस्था थी। उन्हें उनकी पहचान का संकट रह–रहकर कुरेद था । वह आत्म चिंतन करती हुई सोचती कि– "मैं प्रभा खेतान .....कौन हूं ? क्या मेरी कोई पहचान नहीं ? मैं सधवा नहीं, क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई है ; विधवा नहीं .....क्योंकि कोई दिवंगत पति नहीं; मैं कोठे पर बैठी रंडी भी नहीं क्योंकि मैं अपनी देह का व्यापार नहीं करती; मैं किसी पर निर्भर नहीं करती, स्वावलंबी हूं; अपना भरण–पोषण खुद करती हू। स्वेच्छा से एक जीवन का वरण किया है द्यतब मैं क्या हूं ?"[6] इस प्रकार यहां इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि लेखिका ने एक परंपरागत रखैल का ढांचा तोड़ा है। वह एक ऐसी विद्रोहिणी स्त्री रही जो हमेशा वैवाहिक सत्ता को नकारती रही, बिना किसी सामाजिक प्रवाह के। यह विवाह को एक ओवररेटेड संस्था मानकर हमेशा पुरुषवादी सत्ता के विरुद्ध बिगुल बजाती अपनी स्वतंत्र पहचान को बनाने का बीड़ा उठाती रही। स्त्री की परंपरागत नियति पर करारा प्रहार करना, व्यक्तिगत निर्णय की स्वतंत्रता तथा एक अवैध रिश्ते को पूर्ण साहस के साथ जी कर दिखलाना यह लेखिका के स्वतंत्र अस्तित्व को ही व्याख्यायित करता है। अन्या से अनन्या आत्मकथात्मक कृति में स्त्री–विमर्श के पहलू को बहुत व्यापक स्तर पर वर्णित किया गया है। स्त्री–विमर्श के एक महत्वपूर्ण बिंदु स्त्री–स्वतंत्रता को भी इसमें प्रमुख रूप से उभारा गया है। लेखिका की दृष्टि में एक स्त्री का अस्तित्व उसकी स्वतंत्रता व उसकी मुक्ति उसके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने में है। आर्थिक रूप से पराधीन होना एक स्त्री की स्वतंत्रता में सबसे बड़ी बाधा है। प्रभा खेतान ने स्वयं भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना अपनी सर्वप्रथम जरूरत माना। कोलकाता लौटकर वह भी अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। उनको भी डायना त्रातस्की बनने व अपना स्लिमिंग पार्लर खोलने की चाहत थी। स्त्री के भोगे हुए यथार्थ की दास्तां को बयां करने वाली इस कृति में स्त्री–स्वतंत्रता के साथ ही साथ स्त्री–सुरक्षा के पहलू को भी उजागर किया गया है द्य इस प्रकार यह अन्या से अनन्या आत्मकथात्मक कृति स्त्री–विमर्शों का एक ऐसा महत्वपूर्ण कोष है जिसमें कि न सिर्फ प्रभा खेतान के निजी जीवन में घटित घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है बल्कि इस कृति में लेखिका की मां, उनकी बहन, सर्राफ, आईलीन, कैथी, मारथा कुक्कू, नफीसा, मिसेज डी, मनु भंडारी इत्यादि स्त्रियों के संसार को भी इस में जगह मिली है जिससे कि इस कृति में स्त्री–विमर्श के अनेक पक्षों को वाणी मिल पाई है। हिंदी साहित्य जगत में प्रभा खेतान ने अपनी स्त्रीवादी अवधारणा वह व्याख्याकार होने के कारण अपनी एक अलग एवं स्वतंत्र पहचान बनाई। वास्तव में यह अन्या से अनन्या आत्मकथा बोल्ड लेखन व स्त्री–विमर्श का एक ऐसा महत्वपूर्ण महाख्यान सिद्ध हुआ है जिसमें कि स्त्री विमर्श, स्त्री चेतना, स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री सुरक्षा, स्त्री संघर्षशीलता, स्त्री सशक्तिकरण व स्त्री अस्मिता के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण बिंदुओं को चित्रित किया गया है। साथ ही साथ इसमें स्त्री विमर्श के इस पक्ष पर भी अत्यधिक फोकस किया गया है कि विवाह कर लेना व अपने पति, बच्चे, परिवार इन सब में ही उलझे रहना सिर्फ यही स्त्री का अस्तित्व नहीं है। इन सब के इतर भी स्त्री का अपना एक अलग वजूद होना चाहिए और यह हमें इस अन्या से अनन्या कृति में भली–भांति देखने को मिलता है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य समग्र दृष्टि, डॉ. विवेक शंकर एवं श्रीमती उर्मिला साध; पृ 0 दृ 173
2. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान; पृ 0— 257—258
3. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान; पृ 0— 264
4. वही; पृ0 दृ 212
5. गद्य कोश (gadyakosh-org/gk/anya se ananya)
6. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान; पृ 0— 12